सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दिनांक 15 नवम्बर 2015, अलवर

! राधा–स्वामी.!

अगर इस संसार में कोई दुर्लभ रत्न है, तो वो है सतगुरू। क्यों? ऐसा क्यों कहते हैं कबीर साहब, वो इसलिए कहते हैं–क्योंकि सतगुरू तुमको इस संसार के दुखों से छुटकारा दिलाता है। इस संसार में दुख ही दुख हैं, कोई सुखी नही है।

तन धर सुखिया, कोई ना देखा, जो देखा वो दुखिया देखा।

इस इंसानी चोले में मैंने किसी को सुखी नही देखा, जो भी देखा वो दुखी देखा। इस संसार में जितने मनुष्य हैं, उतने ही दुख हैं, और हरेक को दुख है। आप ये मत समझिए की वो आदमी बहुत सुखी है, अगर आप उसके दुख देखोगे तो आप कहोगे कि इससे तो अच्छा मैं ही हूँ। क्यों? कई लोग अपने दुखों को छुपाते हैं। बाहर से अपने आपको खुश रखते हैं। इस संसार में सभी दुखी हैं, और शरीर का दुख तो सभी को है। अब हमने इस संसार में जन्म ले लिया। किस कारण लिया? अपने प्रारब्ध कर्मों के कारण लिया। अगर हमारे पास कोई कर्म नही बचा होता, तो हमें फिर से जन्म नही लेना पडता। लेकिन कुछ तो कर्म बच गए थे, इसलिए जन्म लेना पडा। जो हम अपने साथ कर्मों की टोकरी साथ लाए हैं, साथ–2 लेकर घूमते हैं। जितने भी हम जन्म लेंगे, वो टोकरी हमारे साथ–2 चलेगी और अगर उस टोकरी में एक कर्म भी बच गया, फिर से जन्म। कैसे? One mark less one year more, अगर परीक्षा में पास होने के लिए आपको 33 Marks चाहिएँ, और गलती से 32 Marks आ गए। एक साल फिर, वही किताबें, वही Class वही Teacher. ये जन्म क्यों मिला है हमको? ये जन्म हमको मौज–मस्ती करने के लिए नही मिला है। ये जन्म मालिक ने हमको एक अवसर दिया है। तुम अपने कर्मों की टोकरी खाली करो और वापिस मेरे पास आ जाओ। लेकिन हमारी तकदीर खराब है, हम अपने कर्मों की टोकरी को खाली नही करते, और भारी करते हैं, और फिर से अपना जन्म–मरण का चक्कर पक्का का देते हैं। तो ये जन्म जो हमको मिला है, मनुष्य जन्म सबसे उत्तम माना गया है। मनुष्य जन्म सबसे उत्तम क्यों है? क्योंकि मुक्ति मनुष्य जन्म में ही है। मुक्ति क्या होती है? मुक्ति होती है फिर से जन्म नही लेना। ये अवसर सिर्फ मनुष्य को ही है, फिर मनुष्य जन्म कितना कीमती है? लेकिन हम इसको कौंढियों के भाव बेचते हैं। मनुष्य जन्म को हम समझते ही नही हैं। क्यों? क्योंकि हम अज्ञान के अंधकार में फँसे हुए हैं। तुसली दास कहते हैं– महा–मोह तम कुंज। ये संसार अज्ञान के अंधकार का भंण्डार है। इस संसार में सब अज्ञानी हैं, किसी को ज्ञान नही है। ज्ञान क्या होता है? ज्ञान होता है–इस संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? ज्ञान ये नही कि तुम वेद, पुराण पढो, पोथियाँ पढो, महाभारत, रामायण पढो। ये ज्ञान नही है। दातादयाल कहते हैं– बहा दे सारी पोथियाँ गंगा में, मन को इत्सुक करने का सामान ढूँढ ले, मन को निर्मल करने का सामान ढूँढ ले। मन को निर्मल करने का सामान क्या है? मन की शांती क्या है? क्या किसी को है मन की शांती संसार में? इस संसार में किसी को मन की शांती नही हैं। यहाँ सब दुखी हैं, और जब हम कहते हैं– हे भगवान हमको दर्शन दो, भगवान क्या दर्शन देगा? क्योंकि उसका कोई रूप ही नही है।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

मालिक का कोई रूप नही है, लेकिन हम सब उसी के रूप हैं, और हम ही वही हैं। जिसको हम खोज रहें हैं, वो हम ही हैं, और कोई नही है और हमारे अंदर ही है।

ना मैं कांशी, ना मैं मथुरा, द्वारिका में मैं नही।

तेरे ह्रदय में रहता हूँ, निः संदेह मैं।।

मालिक कहता है– मैं ना काशी में हूँ, ना केदार नाथ मैं हूँ, ना मैं मथुरा में हूँ। मैं तुम्हारे अंदर ही रहता हूँ, और जब वो हमारे अंदर है, फिर हम किसका दर्शन चाहते हैं? हम अपना ही दर्शन माँगते हैं। क्योंकि हम ही हैं वो, जिसको हम खोज रहें हैं।

अंग्रेजी में कहते हैं– Self realisation is god realisation, इसका मतलब है, अगर आपको भगवान को खोजना है, पहले अपने आपको खोजो कि तुम कौन हो? फिर तुमको खुद ही पता लगेगा, भगवान कौन है? तुम अपने आपको खोजना शुरू करो, मैं कौन हूँ? मैं क्यों आया हूँ, इस संसार में? मैं क्या करने आया हूँ इस संसार में? और इस संसार के बाद मुझें कहाँ जाना है? खोजो अपने आपको, कबीर साहब कहते हैं–

जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।
मैं अभागिन डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।

कबीर साहब कहते हैं– तुम अपने अंदर जाओं और खोजो अपने आपको, तुम्हें मिल जाएगा, जिसको तुम तलाश कर रहे हो। वो कहाँ हैं? वो हमारे अंदर है। जिसने भी खोजा, उसको वो मिल गया, और जो मन के विचारों में ही खोया रहा, उसको कुछ नही मिला।

जापान में समुंद्र के नीचे मोती रहते हैं। वहाँ की लडकियाँ बहुत होशियार हैं, वो 2–3 मिनट के लिए साँस बंद करती हैं, और समुंद्र में डुबकी लगाती हैं और मोती बाहर लेकर आती हैं। तो मोती किसको मिला? जिसने डुबकी मारी। जो किनारे पर बैठ गई उसको मोती नही मिला। इसलिए खोजी बनो।

आपको यहाँ से बोम्बे जाना है, पहले एक कदम आगे रखो, गाडी पकडो, स्टेशन पर पहुँचो, तभी तो बोम्बे पहुँच पाओगे, अगर तुम घर पर ही बैठे रहोगे तो बोम्बे नही पहुँच पाओगे। अगर आपको मालिक को पाना है तो खोजी बनो, औा खोजी कहाँ बनो। कहीं मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में नही जाना है। ये जो शरीर है, इसको मालिक ने अपने रहने के लिए बनाया है, वो इसी में रहता है, और जब वो मिलेगा, इसी शरीर में मिलेगा। लेकिन मालिक का कोई रूप नही हैं।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

जब उसका कोई रूप ही नही है, तो क्या देखोगे आप? लेकिन उसका रूप है और आपको मिल जाएगा। पता है उसका रूप क्या है? उस का रूप है– मन की शांती। जब आपके मन में शांता आती है तो आपको मालिक के दर्शन हो जाते हैं। लेकिन मन की शांती मिलना आसान काम नही हैं। गुरू नानक कहते हैं– लाखो मध्य मत गिनो, कोटिन में कोई एक। लाखों में नही करोडों में किसी एक को मन की शांती मिलती है। मन की शांती मिलना क्या होता है? कबीर साहब ने जब कहा–

तन धर सुखिया कोई ना, देखा, जो देखा वो दुखिया देखा।

तो उनसे पूछा आखिर संसार में कोई तो सुखी होगा? तब कबीर साहब ने कहा–

संत सुखी जिन मन जीती रे।

एक संत सुखी है, जिसके मन में शांती आ गई। संत क्यों सुखी है? क्यों उसके मन में शांती है? क्योंकि उसकी सारी इच्छाएँ खत्म हो गईं। जब कोई इच्छा ही नही, तो फिर वो दुख क्यों, सुख ही सुख। हम इच्छा करते हैं इसलिए हम दुखी हैं, अगर हम कोई इच्छा ही नही करें, तो हम सुखी। इसलिए संत सुखी है। अगर उसको सुबह की रोटी मिली और शाम की रोटी की उसे कोई परवाह ही नही है, मिले या ना मिले। सन्त की पहचान क्या है? सन्त की पहचान है, वो ना दुख में दुखी होता है, और ना सुख में सुखी होता है। एकदम एकसार में रहता है, क्योंकि सुख और दुख दोनो संसार हैं। दुख भी संसार है और सुख भी संसार है। ना दुख रहता है, ना सुख रहता है, और सन्त को इसकी पहचान है। वो सोचता है– दुख आता है, जाता है, सुख आता है, जाता है, फिर मैं क्यों इस पचडे में पडूँ। वो आराम से ना दुख में दुखी होता है और ना सुख में सुखी होता है, यही

है सन्त की पहचान। क्योंकि उसको मालिक के दर्शन हो गए, मालिक के दर्शन कैसे हो गए? उसके मन में शांती आ गई। वही मालिक के दर्शन हैं, मालिक का दर्शन और कुछ नही है।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

जब उसका कोई रूप ही नही है, तो वो आपको किस रूप में दर्शन देगा? अगर कोई कहता है कि मुझे मालिक के दर्शन हो गए, तो समझो वो महाझूठा है। भगवान का कोई दर्शन नही होता। अगर कोई कहता है कि मुझे शिव शंकर के दर्शन हो गए, मुझे विष्णु के दर्शन हो गए, तो समझना वो काल है। वो अपने ही मन का दर्शन है, वो मालिक का दर्शन नही है। जब मालिक का कोई रूप ही नही है, तो वो क्या दर्शन देगा? वो अपने मन का खेल है, और वो काल है। अगर कोई कहेगा– मुझको भगवान शंकर ने दर्शन दे दिए। कैसे पता चलेगा ये भगवान शंकर है? क्या गारंटी है कि वो भगवान शंकर है। क्या उसके पास भगवान शंकर का कोई कैमरा फोटो है? क्या उसको कोई कह सकता है, वो भगवान शंकर है? किसी चित्रकार ने अपनी कल्पना से किताब पढ–2 कर, उसकी फोटो बनाई। यहाँ साँप लटकाया, इधर त्रिशूल लटकाया और बन गया भगवान शंकर औा हजारों कलैंण्डर छप गए भगवान शंकर के। अब मेरे मन में भगवान शंकर का यही रूप है कि भगवान शंकर के गले में साँप है, हाथ में त्रिशूल है। ये बनाया किसने? ये बनाया चित्रकार ने। कोई कैमरा फोटो नही है भगवान शंकर का, ये अपने मन की कल्पना है, और जब मैं ध्यान करूँगा भगवान शंकर का, तो इसी रूप में आएगा। तो फिर ये क्या हुआ? अपने ही मन का खेल हुआ। जब वो खुद कहता है–

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

जब मालिक का कोई रूप ही नही है, तो फिर भगवान शंकर का रूप कहाँ से आ गया? सब अपने मन का खेल है, ये सब काल कराता है। भगवान का रूप है आपके अंदर मन की शांती, वो ही उसका रूप है। जिसके अंदर मन की शांती आ गई, उसको भगवान ने दर्शन दे दिए। क्योंकि हम ही तो वही हैं। फिर कहाँ हैं भगवान? इसलिए तो कहते हैं– पहचानो अपने आपको, तुम वही हो, जिसको आप खोज रहे हो, आप वही हो। आप अज्ञान में पत्थर को पूज रहे हो, किसी मूर्ति को पूज रहे हो, वो आपका अज्ञान है। किसी को नही पूजना है।

अगर इस संसार में भगवान आते हैं, तो वो किस रूप में आते हैं? वो मनुष्य रूप में आते हैं। जो उनका अपना असली रूप है, समझो ये सूरज है, ऐसे अरबों खरबों सूरज, इतनी शक्ति है उसमें। क्या वो आ सकता है इस संसार में? ये सूरज अगर 1 कि. मी. भी नजदीक आ जाए धरती पर, तो ये धरती जल जाएगी, और जिसने ऐसे करोडो सूरज बनाए हैं, क्या वो खुद आ सकता है, यहाँ पर? नही आ सकता। क्योंकि माचिस की तरह सारी धरती जल जाएगी। लेकिन वो आते हैं, किस रूप में आते हैं? वो आते हैं गुरू के रूप में। वो भगवान कृष्ण के रूप में आए, वो राम के रूप में आए, वो क्राईस्ट के रूप में आए, वो बुद्ध के रूप में आ कबीर के रूप में आए। फिर राधा स्वामी के रूप में आए, फिर बाबा फकीर के रूप में आए, फिर मानव दयाल के रूप में आए। क्यों आते हैं इस रूप में? अगर वो किसी और रूप में आ जाएँ, फिर आप उनसे बात नही कर सकेंगे, और ना ही अपने सवालों के जबाब पूछ सकेंगे। इसलिए वो उस रूप में आता है, जिस रूप में आप उसको देख सकें, उनसे सवाल कर सकें, और अपने मन के संशय दूर कर सकें। तो गुरू का रूप क्या है? गुरू का रूप मालिक ही है। पहचानो उसको, जिसने गुरू को पहचान लिया, ये मालिक का रूप है, वो तर गया। जिसने नही पहचाना, वो रह गया। गुरू की ताकत को मापना मालिक की ताकत को मापना है। इसलिए कबीर साहब कहते हैं– सतगुरू खोजो रे भाई, जग में दुर्लभ रत्न यही है।

अगर संसार में कोई दुर्लभ रत्न है, तो वो सतगुरू है।

!! राधा स्वामी !!